राजस्थान के परमार शासक एवं सूर्योपासना

डॉ. अनिता सुराणा,

व्याख्याता (इतिहास), आर. एल. साहरिया राजकीय महाविद्यालय, कालाडेरा (जयपुर)

7वीं ईस्वी से 12वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य का लगभग 500 वर्षों का समय भारतीय इतिहास में 'राजपूतकाल' के नाम से जानाता है क्योंकि राजनीतिक क्षितिज पर उभरने वाले राजवंश अपने को 'राजपूत' नाम से सम्बोधित करते थे। इन नवीन राजपूत राजवंशों में गुर्जर प्रतिहार[1] गुहिल[2], चाहमन[3] तथा परमार[4] विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं राजस्थान के विस्तृत क्षेत्र समय–समय पर इनके अधिकार क्षेत्र में रहे। राजपूत राजवंशों में सर्वप्रथम गुर्जर–प्रतिहार राजनीतिक क्षितिज पर उभरे। दक्षिणी–पश्चिमी राजस्थान में प्रतिहारों की शक्ति क्षीण होते ही इस क्षेत्र में परमारों का वर्चस्व स्थापित होने लगा। परमार वंश की अनेक शाखाओं की जानकारी मिलती है यथा धारा, उज्जैन (मालवा एवं लाट) के परमार, चन्द्रावती (आबू) के परमार, बागड़ (बांसवाड़ा–डूंगरपुर) के परमार, जावालिपुर (जालौर) के परमार तथा किराटकूप (किराडू) के परमार आदि।[5] इनमें मालवा (धारा–उज्जैन) शाखा शक्तिशाली थी। जबकि अन्य शाखाएँ सामन्त रूप में थी। राजस्थान में स्थित परमारवंशीय सामन्ती राज्यों के संरक्षण में चन्द्रावती, बागड़, जावालिपुर एवं किराटकूप क्षेत्रों में धर्म एवं कला का चतुर्दिक विकास हुआ।

जिस प्रदेश पर आबू शाखा का प्रभुत्व था, वह अर्बुदमण्डल के नाम से विख्यात था।[6] इसका विस्तार पूर्व में देलवाडा, दक्षिण में पालनपुर और उत्तर में गाद्धा जनपद तक था। पश्चिम की ओर इसकी सीमा पर भीनमाल के परमारों का प्रदेश था। आबू शाखा के परमारों की राजधानी चन्द्रावती थी जो कि सिरोही राज्य के दक्षिण–पूर्व में बनास नदी के तट पर स्थित थी। वर्तमान में यह नगर पूर्ण ध्वंसावस्था में है। इस वंश के आरम्भिक इतिहास के संबंध में उपलब्ध सूचना अल्प है। उत्पल का पुत्र अरण्यराज इस वंश का प्रथम राजकुमार था जो इस प्रदेश का अधीश्वर बना। उसके बाद अद्भुत कृष्णराज, महीपाल, धन्धुक, पूर्णपाल, ध्रुवभट्ट, रामदेव, विक्रमसिंह, यशोधवल, धारावर्ष, अन्त में प्रतापसिंह आदि शासक हुए।

बागड़ शाखा का राज्य वर्तमान बांसवाड़ा और डूंगरपुर क्षेत्र में था। बांसवाड़ा से लगभग 42 कि.मी. पश्चिम की ओर स्थित अर्पूणा इनकी राजधानी थी। जनश्रुति के अनुसार इसका प्राचीन नाम अवरावती था। बागड़ के परमार, मालवा शाखा के उपेन्द्र कृष्णराज के छोटे पुत्र डंबरसिंह के वंशज थे।[7] इस वंश का आरम्भिक ज्ञात शासक धनिक है जिसका समय 10वीं शताब्दी के मध्य में है। चण्डप, सत्यराज, लिम्बराल, माण्डलिक, चामुण्डराज एवं विजयराज आदि इस वंश के अन्य प्रमुख शासक थे। जालौर शाखा की स्थापना वाक्यतिराज के पुत्र चन्दन ने की थी। उसके उपरान्त देवराज, अपराजित, विज्जल, धारावर्ष और बीमल नामक शासकों ने राज्य किया। इस राजवंश का अन्त ई. सन् की 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नाडौल के चौहानों द्वारा हुआ।

भीनमाल शाखा की राजधानी श्रीमाल (वर्तमान भीनमाल) थी। इस शाखा का संस्थापक सिंधुराज का पुत्र दूसल था। दूसल के बाद देवराज, धन्दुक, कृष्णराज, सोच्छिराज, उदयराज, सोमेश्वर, जैयनसिंह, सलेख, देवपाल, उदयवर्मन, जयतुगिदेव, जयवर्मन, जससिंह दिद्वतीय, अर्जुन वर्मन द्वितीय, जयसिंह तृतीय, भोज द्वितीय,

महलकदेव तथा जयसिंह तृतीय ने राज्य किया। 12वीं शताब्दी के अन्त तक नाडौल की चौहान शाखा ने इनसे राजसत्ता हथिया ली।

परमारों के शासन काल में हिन्दू धर्म पर्याप्त लोकप्रिय हुआ। जनसाधारण का यह विश्वास था कि वैदिक काल से ही आबू पर्वत एक महान तीर्थ स्थान रहा है। ऐसी मान्यता थी कि वैदिक ऋषि वशिष्ठ और विश्वामित्र का यहां निवास स्थल था।[8] परमार शासक हिन्दू धर्म के वैष्णव एवं शैव सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य उपासना में भी आस्था रखते थे। परमारों के शासन काल में 'भिलसा' सूर्य पूजा का सबसे प्रमुख केन्द्र था, जहां भेल्लस्वामिन के मंदिर की स्थापना ई. सन् 878 से पूर्व हो चुकी थी।[9] भिलसा से प्राप्त दो लेखों का प्रारम्भ 'ओम नमः सूर्याय' मंत्र से हुआ है। उनमें से एक लेख पर भोज के संरक्षण में रहने वाले महाकवि चक्रवर्ती पण्डित **छिच्य** की लिखी एक सूर्य प्रशस्ति उत्कीर्ण मिलती है।[10] भीनमाल प्रतिहारों के समय से ही सौर–उपासना का एक प्रमुख केन्द्र था। यहां का सूर्य मंदिर जगत्स्वामि नाम से विख्यात था।[11] भीनमाल शाखा के परमार नरेश कृष्ण राज के एक अभिलेख में यह उल्लेख मिलता है कि शिव ने सूर्य की अर्चना में हाथ जोड़े।[12] कृष्णराज के ही शासन काल में विक्रम संवत 1117 के एक अभिलेख से यह विदित होता है कि धरकुट वंश के किरणादित्य और वानी, धन्धक, माधव पुत्र ददहरि, धरणचन्द्र के पुत्र धन्धक तथा थारवाट वंश के सर्वदेव के पुत्र धरनादित्य नामक पांच महानुभावों द्वारा जगत्स्वामी मंदिर के जीर्णोद्धार के पश्चात जेजाक नामक ब्राह्मण द्वारा स्वर्ण कलश स्थापित करवाने का उल्लेख भी अभिलेख में है।[14] आबू शाखा के परमार नरेश पूर्णपाल की अनुजा लाहिनी द्वारा भी बसन्तगढ़ में एक सूर्य मंदिर के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख भी एक अभिलेख में प्राप्त हुआ है।[15] बसन्तगढ़, सिरोही जिले की पिण्डवाड़ा तहसील से दक्षिण में 8 कि. मी. दूर स्थित है। लाहिनी ने सम्भवतः मंदिर के शिखर का पुनर्निमाण करवाया था। मंदिर के द्वार तथा चारदीवारी का पुनः निर्माण लाहिनी के पति के एक पूर्वज, भावगुप्त द्वारा करवाया गया था।

परमार नरेश भोज द्वारा लिखित 'श्रृंगारमंजरी कथा' में विजय दशमी के दिन पुत्र प्राप्ति हेतु सूर्य पूजा का विधान बताया है।[17] वर्माण के सूर्य मंदिर का निर्माण भी परमार काल में ही हुआ था।[18] वर्माण सिरोही जिले में आबू रोड़ रेल्वे स्टेशन से 30 मील की दूरी पर स्थित है। वर्माण ग्राम के बाहर एक सूर्य मंदिर है। इस मंदिर के स्तम्भों पर 11वीं शती ईस्वी एवं 14वीं शती ईस्वी के अनेक लेख उत्कीर्ण हैं जिनमें इष्टदेव सूर्य का 'ब्राह्मणस्वामी' कहा गया है। 'वर्माण' सम्भवतः ब्राह्मण का ही अपभ्रंश है।[19] संगमरमर से निर्मित यह सूर्य मंदिर कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि परमार काल में सौर उपासना पर्याप्त लोकप्रिय थी। परमार काल में न केवल नवीन सूर्य मंदिरों का निर्माण करवाया गया वरन् उनके संरक्षण एवं सम्वर्द्धन हेतु मुक्तहस्त से दान दिया। राजस्थान में राजपूत काल में सौर सम्प्रदाय पूर्ण विकसित तथा लोकप्रिय सम्प्रदाय के रूप में स्थापित हो चुका था। सूर्योपासना राजवंशों और सामन्तों तक ही सीमित नहीं थी। जनसाधारण में भी सौर सम्प्रदाय पर्याप्त लोकप्रिय था। लाण बावड़ी प्रशस्ति में उल्लेख मिलता है कि लाहिनी ने जनसाधारण की आवश्यकता को अनुभव करके ही बसन्तगढ़ के सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। भीनमाल के विख्यात सूर्य मंदिर में भारत के विभिन्न प्रदेशों से बड़ी संख्या में भक्तगण दर्शनार्थ आते थे।

संदर्भ

1. दृष्टव्य, पुरी, बी. एन., दि हिस्ट्री ऑफ गुर्जर प्रतिहारज ; मिश्र वी.बी., दि गुर्जर प्रतिहारज

एण्ड देयर टाइम्स ; मुंशी, के. एम. दि ग्लोरी देट वाज गुर्जर देश।

2. दृष्टव्य, सरकार, डी. सी., दि गुहिल्स ऑफ किष्किंधा ; शर्मा, दशरथ, राजस्थान थ्रू दि एजेज, मजूमदार, आर.सी., श्रेण्य युग
3. शर्मा, दशरथ, अर्ली चौहान डायनेस्टीज ; सिंह, आर. वी., हिस्ट्री ऑफ चाहमानाज।
4. गांगुली, जे. सी., हिस्ट्री ऑफ दि परमार डायनेस्टी ; भाटिया, प्रतिपाल, दि परमाराज ; सेठ, के.एन., हिस्ट्री ऑफ परमारज।
5. गांगुली, डी.सी., वही, भाटिया, प्रतिपाल वही
6. एपिग्रैफिया इण्डिका, वोल्यूम 19, पृ. 13
7. वही, वोल्यूम 14, पृ. 304
8. पाटनी, सोहनलाल, अर्बुदमण्डल का सांस्कृतिक वैभव, पृ. 5 एवं आगे
9. एपिग्रैफिया इण्डिका, वोल्यूम 30, पृ. 213
10. भाटिया, प्रतिपाल, पूर्व निर्दिष्ट, पृ. 256
11. मार्ग, वोल्यूम 12, अंक 2 (1959, मूर्तिकलांक), पृ. 56
12. बोम्बे गजेटियर, 9, पृ. 474
13. गांगुली, डी. सी., परमार राजवंश का इतिहास, पृ. 241
14. वही
15. वही, पृ. 313, एपिग्रैफिया इण्डिका, वोल्यूम 9, पृष्ठ 14
16. प्रोग्रेस रिपोर्ट, आर्क्योलॉजिकल सर्वे, वेस्टर्न सर्किल, जुलाई 1905 से मार्च 1906, पृ. 53

Copyright © 2015 *Dr. Anita Surana*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.